VIBRANT GANGA

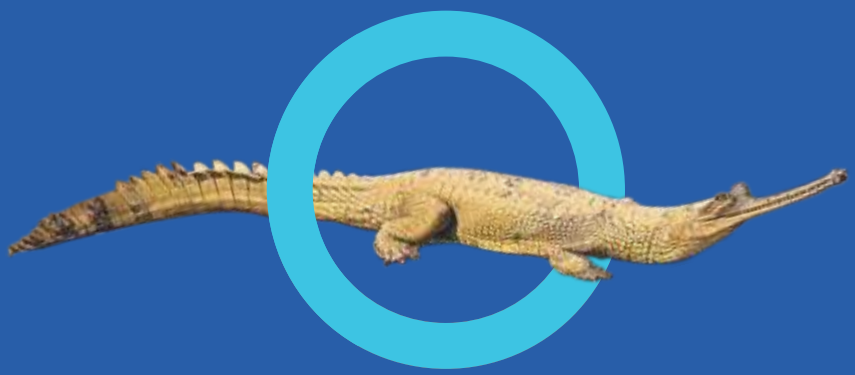

गंडक नदी

पवित्रता का प्रतीक

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

विस्तृत जानकारी

- गंडक नदी नेपाल सीमा के निकट तिब्बत मे स्थित धौलागिरी पर्वत के उत्तर से 7,620 मीटर समुद्र तल की ऊंचाई से निकलती है।
- तिब्बत और नेपाल से निकलने के बाद, गंडक बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले से भारत मे प्रवेश करती है। जिसके बाद, नदी दक्षिण दिशा में बहती है और बिहार के हाजीपुर में गंगा से मिलती है।
- नदी की लम्बाई 749 किलोमीटर है, जिसमें से 292 किलोमीटर भारत में आता है। गंडक नदी का जल ग्रहण क्षेत्र 46,300 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें से 7,620 वर्ग किलोमीटर भारत में पडता है।
- हिमनद से निकलने वाली गंडक नदी गंगा नदी की दूसरी बाएँ किनारे की सहायक नदी है।
- गंडक नदी गंगा के मैदानी जैव–भौगोलिक क्षेत्र (7ए और 7बी) उत्तर प्रदेश और बिहार के घनी आबादी वाले राज्यों से होकर गुजरती है।
- गंडक नदी बेसिन का जलवायु उप–आर्द्र और आर्द्र–मानसून है।
- बूढ़ी गंडकी, मार्शयांगडी, माडी, सेती गडंकी, दरौदी और काली गंडकी गंडक की कुछ सहायक नदियां हैं।

मुख्य विशेषताऐं

- नेपाल में त्रिसुली नदी के साथ संगम के बाद गंडक नदी को "काली गंडकी" और "नारायणी" के नाम से जाना जाता है। हिमालयी क्षेत्र में इसे "सप्त गंडकी" के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह सात अलग–अलग नदियों से पानी और तलछट प्राप्त करता है।
- दुनिया की ऊँची चोटियों धौलागिरी और अन्नपूर्णा से निकलने वाली यह नदी गहरी और संकीर्ण घाटी बनाती है, इसलिए इसकी नदी प्रणाली बदली नही है।
- बेसिन में उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती वनों का प्रभुत्व है जिसमें अर्ध–सदाबहार जंगलों और घास के मैदानों के छोटे भाग हैं। नदी में कुल 233 पौधों की प्रजातियों का दर्ज किया गया है।

गंडक नदी को चार क्षेत्रों मे विभाजित किया गया है–

- गंडक नदी से गांगेय डॉलफिन (*प्लैटनिस्टा गैंजेटिका*), और स्मूथ कोटेड ओटर (*लूट्रोगेल पर्सपिसिलेटा*) को रिपोर्ट किया गया है।
- गंडक नदी दो मगरमच्छ प्रजातियों, घड़ियाल (*गेवियलिस गेंजेटिकस*), और मग्गर (*क्रोकोडायलस पेलस्ट्रिस*) का घर है।
- नदी भारत के पांच महत्वपूर्ण कछुओं की प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में से एक है, क्योंकि यह आठ मीठे पानी और एक भूमि कछुए की प्रजातियों का आवास स्थान है।
- गंडक नदी से 83 जलपक्षियों की प्रजातियों को दर्ज किया गया है।
- भारतीय क्षेत्र में गंडक नदी मे 54 मछली प्रजातियां पाई जाती है, जिनमें से साइप्रिनिडे फैमिली अधिकतम संख्या को दर्शाता है।

संकटग्रस्त (EN) प्रजातियाँ

सरीसृप
चित्रा, पचेरा

पक्षी
पलास फिश ईगल

स्तनधारी
गांगेय डॉल्फिन

प्रमुख संरक्षित क्षेत्र

- चितवन राष्ट्रीय उद्यान (नेपाल)
- वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान (भारत)
- सोहगी–बरवा वन्यजीव अभ्यारण्य (भारत)
- उदयपुर पक्षी अभ्यारण्य (भारत)
- काबर झील पक्षी अभ्यारण्य (भारत)

गंभीर रूप से संकटग्रस्त (CR) प्रजातियाँ

सरीसृप
घड़ियाल, ढोन्ड

रोचक तथ्य

- हिंदू पौराणिक कथाओं में माना जाता है कि गंडक की उत्पति भगवान विष्णु के पसीने से हुई थी, जब वे इसके स्त्रोत के पास तपस्या कर रहे थे।
- हिंदू धर्म में, नदी को पवित्र माना जाता है, क्योंकि इसमें शालिग्राम हैं, जो डिवोनियन काल का एक अमोनाइट जीवाश्म है, जिसका उपयोग भगवान विष्णु के दैविक रूप को दर्शाता है।
- प्रसिद्व हरिहरनाथ मंदिर, जहां गज (हाथी) और ग्रह (मगरमच्छ) की पौराणिक लडाई हुई थी, नदी के तट पर स्थित है।
- हिंदू पौराणिक कथाओं में ऐसा माना जाता है कि ऋषि वाल्मीकि गंडक नदी के तट पर रहते थे और रामायण की रचना करते थे।
- वैशाली, जो विश्व का पहला गणतंत्र, भगवान महावीर का जन्मस्थान और भगवान बुद्व के अंतिम उपदेश का स्थल है, गंडक के तट पर स्थित है।
- नालंदा, मगध (आधुनिक बिहार) में शिक्षा का एक प्रसिद्व प्राचीन बौद्व केंद्र, गंडक के किनारे स्थित है।

नदी-परिदृश्य (रिवरस्केप) को बदलने वाले कारक

- रेत खनन, कृषि अपवाह और नदी में छोड़े गए अनुपचारित सीवरेज प्रमुख जलीय जीवों के आवास को प्रभावित करते हैं।
- वर्षा ऋतु मे बाढ से नदी किनारे का कटाव होना नदी आवास विखंडित करता है।
- हद से ज्यादा मछली पकड़ने की वजह से प्रमुख जलीय जीवों के भोजन की उपलब्धता मे कमी आना।
- अवैध व्यापार और अवैध शिकार कछुओं के आबादी के लिए एक बड़ा खतरा है।
- गंडक बैराज बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले में भारत नेपाल सीमा पर नदी को नियंत्रित करता है। नेपाल पश्चिम गंडक नहर और नेपाल पूर्वी नहर में पानी का विभाजन नदी प्रणाली तंत्र को प्रभावित करता है।

नमामि गंगे

एन एम सी जी
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और
गंगा संरक्षण विभाग,
मेजर ध्यानचंद्र स्टेडियम, नई दिल्ली–110001

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

जी ए सी एम सी
गंगा एक्वालाइफ कनजर्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर
भारतीय वन्य जीव संस्थान
पोस्ट बॉक्स न. 18, मोहब्बेवाला, देहरादून–248002, उत्तराखंड
फोन न.- 91-135-260112-115
wii.gov.in/nmcg_phase2_introdution